विश्व स्त्रातजिक प्रांगण में मध्य-पूर्व क्षेत्र

प्रो0 सतीश चन्द्र पाण्डेय,
आचार्य,
रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग,
दी0द0उ0गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर।

मध्य–पूर्व क्षेत्र में अरेवियन प्रायद्वीप, मिस्र, इजराइल, सीरिया, जार्डन, इराक, लेबनान और टर्की के भाग सम्मिलित हैं। फारस की खाड़ी के पश्चिम और नील नदी के पूर्व तथा एशियाई टर्की के दक्षिण के क्षेत्रों को इसमें सम्मिलित कहा जा सकता है।

प्राचीन काल में भारत और चीन तथा पाश्चात्य जगत के बीच ज्ञान–विज्ञान का जो आदान–प्रदान हुआ उसमें मध्य–पूर्व क्षेत्र की प्रमुख भूमिका रही। सामुद्रीक शक्ति के अभ्युदय के पहले इस क्षेत्र ने अफ्रीका, एशिया और यूरोप के मध्य थलीय पुल की भूमिका निभायी जिसके कारण सिकन्दर और नैपोलियन जैसे विजेताओं ने इस क्षेत्र पर अधिकार रखने का प्रयत्न किया।

विश्व के तीन धर्मों ईसाई, इस्लाम और जूदावाद का यहाँ प्रारम्भ हुआ जिसके कारण यह क्षेत्र इन धर्मों के अनुयायियों के भावात्मक आकर्षण का केन्द्र बना रहा। जेरूसलम यहूदी, ईसाई और मुसलमान तीनों के लिए पवित्र स्थल है 12वीं शताब्दी में जेरूसलम को लेकर ईसाईयों और मुसलमानों के बीच धार्मिक युद्ध हुए। वर्तमान में जेरूसलम विदेशी मुद्रा अर्जित करने वाले स्रोत के रूप में पर्यटकों के आकर्षण बन चुका है। समसामयिक परिस्थितियों में जेरूसलम पर अधिकार करने के पीछे जो युद्धनीतिक मंशा छिपी हुई है उसको इस आर्थिक वास्तविकता से पृथक करके नहीं देखा जा सकता।

चौदहवीं शताब्दी में सामुद्रिक शक्ति का विकास प्रारम्भ हुआ था और यूरोप में औद्योगिक चेतना के कारण इसके विकास में और तेजी आयी। समुद्री मार्गों द्वारा एशिया और अफ्रीका महाद्वीपों तक माल ले जाने और वहाँ पर उपनिवेश कायम करने की इच्छा जोर पकड़ती गयी। मध्य–पूर्व क्षेत्र पर चौदहवीं शताब्दी से लेकर 1683ई0 तक मुसलमानों का शासन कायम रहा। लेकिन उनका पतन प्रारम्भ होते ही इस क्षेत्र में यूरोपीय प्रतिस्पर्धा प्रारम्भ हो गयी।

ब्रिटेन के लिए मिस्र और फारस की खाड़ी के क्षेत्र महत्वपूर्ण थे क्योंकि यह ब्रिटेन को भारत और दक्षिण–पूर्व एशिया में स्थापित ब्रिटिश साम्राज्य से जोड़ने वाले सम्पर्क क्षेत्र थे। रूस भी इस क्षेत्र में अपना वर्चस्व स्थापित करनके लिए प्रयत्नशील था। उपनिवेशवादी प्रतिस्पर्धा में जर्मनी भी इस क्षेत्र के अधिकांश भू–भाग पर अधिकार करना चाहता था। फ्रांसीसी अपने हितों की रक्षा के लिए इस क्षेत्र पर अधिकार करना चाहते थे। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक चरण में मुस्लिम साम्राज्य का पतन हो गया और ब्रिटेन तथा जर्मनी मध्य–पूर्व क्षेत्र पर अपना वर्चस्व कायम करने में लग गये। जर्मनी ने बर्लिन–बगदाद रेलमार्ग का निर्माण कर इस दिशा में कदम बढ़ाया। इस प्रकार वर्चस्व कायम करने की प्रतिस्पर्धा जोर पकड़ती गयी।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जब मध्य–पूर्व क्षेत्र में तेल की खोज में सफलता मिली तभी से यह उस क्षेत्र के महत्व को बढ़ाने में स्त्रातजिकीय दृष्टि से निर्णायक सिद्ध हुआ। विश्व के ज्ञात तेल के स्रोतों का लगभग 60 से 70 प्रतिशत इस क्षेत्र की धरोहर है। तेल और इसके उत्पादन न केवल ईंधन के रूप में महत्वपूर्ण है बल्कि इनका अन्य क्षेत्रों में भी उपयोग होता है। जैसे–जैसे विश्व में तेल की खपत बढ़ती जा रही है तेल के मूल्य में वृद्धि भी स्वाभाविक है और बीसवीं शताब्दी के अन्त तक तेल के रिजर्व में कमी आ जाने की सम्भावना बढ़ती जा रही है।

तेल के युद्धनीतिक और अन्य प्रकार के महत्वों को मद्देनजर रखते हुए अमेरिका तेल के व्यापार में पूँजी लगाये हुए है और विश्व की सात बड़ी तेल कम्पनियों में से पाँच अमेरिका की है। अमेरिका अपने तेल की खपत का लगभग 20 प्रतिशत मध्य–पूर्व क्षेत्र से आयात करता है। सम–सामयिक परिवेश में उसके तेल आयात में और वृद्धि होने की सम्भावना है। जापान तथा अधिकांश यूरोपीय राष्ट्र मध्य–पूर्व क्षेत्र के तेल के प्रमुख ग्राहक हैं। इसके अतिरिक्त विकासशील जगत के बहुत से देश अपनी आर्थिक और औद्योगिक आवश्यकता के लिए मध्य–पूर्व क्षेत्र के तेल निर्यातक देशों पर निर्भर हैं।

शीत युद्ध की समाप्ति से पूर्व महाशक्तियों की मध्य-पूर्व क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा

शीत युद्ध की समाप्ति से पूर्व मध्य–पूर्व में दोनों महाशक्तियों की प्रतिस्पर्धा आर्थिक और विभिन्न प्रकार के समसामयिक और दीर्घकालिक स्त्रातजीकिय हितों के संरक्षण और सम्वर्द्धन को लेकर रही है। फलस्वरूप राजनीतिक तनाव शैथिल्य की

स्थितियाँ उत्पन्न हो जाने के बावजूद इस क्षेत्र में सामरिक पहुँच के लिए दोनों में से कोई भी महान शक्ति स्वयं को रोक नहीं सकती थीं। पूर्व सोवियत संघ के प्रमुख तात्कालिक हित निम्नलिखित रहे हैं–

1. भूमध्यसागर पर सोवियत प्रभुत्व कायम रहने पर दक्षिण की तरफ से नाटों के देशों को भावी युद्ध में घेरने का सामरिक लाभ प्राप्त हो सकता था।
2. इस क्षेत्र से सोवियत नौ सेना और व्यापारिक बेड़े की रक्षा के लिए आधार प्राप्त करना।
3. मध्य–पूर्व क्षेत्र की तेल सम्पदा और अन्य उत्पादों के दोहन का मार्ग प्राप्त करना।
4. सोवियत हथियारों की यहाँ खपत से विदेशी मुद्रा के अर्जन में पर्याप्त वृद्धि करना।

इसके विपरित संयुक्त राज्य अमेरिका के हित भी इस क्षेत्र में निम्नलिखित रहे हैं–

1. तेल की आपूर्ति की व्याक सुरक्षा।
2. मध्य–पूर्व क्षेत्र में लगायी गयी पूँजी का रक्षण और सम्वर्द्धन।
3. संकटकालीन परिस्थितियों में खाड़ी क्षेत्र के वन्दरगाहों और तटीय सामरिक स्थलों का हिन्द महासागर स्थित सैनिक अड्डों और अन्य सामुद्रिक बड़ों से सहयोग।